अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पूनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण होता है। चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो शोधकार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है। क्योंकि यह समस्या की पूरी तस्वीर उभारने में मदद करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा बनाने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा इसके आभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक शोधकर्ता को ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है किस प्रविधी से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

- जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता।
- ज्ञान के क्षेत्र विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान कि वर्तमान सीमा कहां पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
- पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतरदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
- पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का ज्ञान होता है।
- सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में शोधकर्ता करने का आवश्यकता होती है।

⌘ **भारती. और रेड्डी.** ने 2002 में हैदराबाद तथा सिंकदराबाद के 100 प्राथमिक शाला शिक्षकों में कार्यों के तनाव निर्मित होने वाले कारणों को जानने के लिए अध्ययन किया था।

उद्देश्य :– मिशनरी तथा शासकीय प्रा. शालाओं के शिक्षकों में कार्यो से तनाव निर्मिती के कारणों का अध्ययन करना तथा कार्यो के तनाव को कम करने के लिये क्या उपाय किये जाते है उसका अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– मिशनरी प्रा. शाला शिक्षको में तनाव निर्मिती के मुख्य कारणों में समय निर्धारण तथा नौकरी की असुरक्षा से अधिक तनाव उत्पन्न होता है। तथा शासकीय प्रा. शाला शिक्षकों में अशैक्षिक कार्यों की अधिकता यह मुख्य कारण पाया। कार्यों के तनाव के दूर तथा कम करने के लिये अधिकतर शिक्षकों ने योगासन तथा ध्यानसाधना का उपयोग करते है ऐसा पाया है।

⌘ **टैर्वस. एवं कुपर.** ने 1997 में इंग्लैंड तथा फ्रांस के 800 शिक्षकों का अध्ययन किया तथा पाया की कार्यों के तनाव के कारण 22 प्रतिशत शिक्षक विभिन्न प्रकार की बीमारियों से जूझ रहे है।

इंग्लैंड के शिक्षक अधिक समय कार्य करने तथा राजनैतिक हस्ताक्षेप के कारण तनाव ग्रस्त पाये गये।

बदलते वातावरण का असर भी एक घटक है जो कार्यो के तनाव को बढ़ता है।

⌘ **एन्डरसन.** ने 1991 में इंग्लैंड के 91 शिक्षकों का अध्ययन किया। पांच सप्ताह के समायावधि में उन्होंने कार्यों से उत्पन्न तनाव को आधार मानकर ध्यानसाधना के माध्यम से पूर्व परीक्षण तथा पश्चय परक्षिण का तुलनात्मक अध्ययन कर पाया की ध्यानसाधना से कार्यो के तनाव को 60 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है।

⌘ **हैरिश.** ने 1999 में अमेरिक के प्राथमिक शाला शिक्षकों का अध्ययन किया था इसके लिए इन्होंने "विल्सन स्टेस प्रोफाईल" शिक्षकों के लिए बनाई गई उसका उपयोग कर अध्ययन किया और पाया की शिक्षकों की अपेक्षा प्रधानाध्यापकों पर कार्यों का अधिक तनाव है तथा अन्य शिक्षकों पर कम तनाव है।